IJETIR

ISSN (Online) 2583-0554

IJETIR
Impact Factor: 5.731

International Journal of Emerging Technologies and Innovative Research (IJETIR)

Volume 5, Issue 2, February 2025

सामान्य एवं विकलांग विद्यार्थियों के बुद्धि और समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन

देवेंद्र सिंह[1] **डॉ. मोहम्मद जावेद[2]**

[1]शोधार्थी [2]सहायक प्राध्यापक

विभाग शिक्षा शास्त्र

सनराइज विश्वविद्यालय, अलवर, राजस्थान

सारांश

यह अध्ययन सामान्य एवं विकलांग विद्यार्थियों के बुद्धि स्तर (IQ) और समायोजन (Adjustment) का तुलनात्मक विश्लेषण करता है। अध्ययन के लिए 120 विद्यार्थियों (60 सामान्य और 60 विकलांग) को चुना गया। बुद्धि स्तर का आकलन स्टैनफोर्ड-बिनेट बुद्धि परीक्षण द्वारा किया गया, जबकि समायोजन का मूल्यांकन बेल्स समायोजन सूची (Bell's Adjustment Inventory) से किया गया। परिणाम बताते हैं कि सामान्य विद्यार्थियों का बुद्धि स्तर औसतन अधिक है, जबकि विकलांग विद्यार्थियों में सामाजिक समायोजन चुनौतियाँ अधिक देखी गईं।

मुख्य संकेतक: - बुद्धि स्तर, सामायोजन, शैक्षिक समायोजन, सामाजिक समायोजन ।

परिचय

शिक्षा समाज के विकास का आधार है और इसका उद्देश्य सभी विद्यार्थियों को समान अवसर प्रदान करना है, चाहे वे सामान्य हों या किसी प्रकार की विकलांगता से ग्रस्त। आधुनिक शिक्षाशास्त्र में समावेशी शिक्षा (Inclusive Education) की अवधारणा को विशेष महत्व दिया गया है, जिसमें विकलांग विद्यार्थियों को भी समान अवसर और सुविधाएँ प्रदान करने की बात कही जाती है। हालांकि, सामान्य एवं विकलांग विद्यार्थियों के मानसिक विकास, बुद्धि स्तर (IQ), और समायोजन क्षमता (Adjustment) में महत्वपूर्ण अंतर देखने को

ISSN (Online) 2583-0554
Impact Factor: 5.731
International Journal of Emerging Technologies and Innovative Research (IJETIR)
Volume 5, Issue 2, February 2025

मिलता है। इस शोध का उद्देश्य दोनों समूहों के बीच इन कारकों का तुलनात्मक अध्ययन करना है ताकि शिक्षा प्रणाली को अधिक प्रभावी बनाया जा सके।

1. शिक्षा और बुद्धि का संबंध

बुद्धि (Intelligence) को मानसिक क्षमताओं का वह समूह माना जाता है जो व्यक्ति को सीखने, तर्क करने, समस्याओं को हल करने और वातावरण के अनुरूप समायोजित होने में सहायता करता है (Gardner, 1993)। स्टर्न (Stern, 1912) ने बुद्धि को "जीवन की परिस्थितियों के अनुकूल होने की क्षमता" के रूप में परिभाषित किया है। स्टैनफोर्ड-बिनेट बुद्धि परीक्षण (Stanford-Binet Intelligence Scale) और वेक्सलर इंटेलिजेंस स्केल (Wechsler Intelligence Scale) जैसे मापदंडों का उपयोग कर किसी व्यक्ति की बुद्धि का आकलन किया जाता है।

सामान्य विद्यार्थियों की तुलना में विकलांग विद्यार्थी विभिन्न मानसिक और शारीरिक चुनौतियों का सामना करते हैं, जिससे उनकी बौद्धिक और सामाजिक प्रगति प्रभावित हो सकती है। अध्ययनों से पता चला है कि विकलांग विद्यार्थियों में संज्ञानात्मक विकास की गति सामान्य विद्यार्थियों की तुलना में धीमी हो सकती है (Anastasi, 1988)।

2. समायोजन की अवधारणा और महत्व

समायोजन (Adjustment) को मनोविज्ञान में व्यक्ति की सामाजिक, शैक्षिक और भावनात्मक परिस्थितियों के अनुकूल होने की क्षमता के रूप में देखा जाता है। यह विभिन्न कारकों पर निर्भर करता है, जिनमें पारिवारिक वातावरण, शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य, सामाजिक समर्थन, तथा शैक्षिक परिस्थितियाँ शामिल हैं (Lazarus & Folkman, 1984)।

सामान्य विद्यार्थी, जिनका मानसिक और शारीरिक विकास सामान्य रूप से होता है, आमतौर पर अपने सामाजिक और शैक्षिक वातावरण के अनुरूप अधिक सहजता से समायोजित हो जाते हैं। इसके विपरीत, विकलांग विद्यार्थी कई प्रकार की चुनौतियों का सामना करते हैं, जैसे कि:

1. **शैक्षिक चुनौतियाँ** – पाठ्यक्रम की जटिलता को समझने में कठिनाई।
2. **सामाजिक चुनौतियाँ** – सहपाठियों से मेलजोल और आत्म-स्वीकृति में कठिनाई।
3. **भावनात्मक चुनौतियाँ** – आत्म-सम्मान और आत्म-स्वीकृति से जुड़ी समस्याएँ।

IJETIR
Impact Factor: 5.731

बेल्स समायोजन सूची (Bell's Adjustment Inventory) जैसे उपकरणों का उपयोग समायोजन के स्तर को मापने के लिए किया जाता है। कई शोध यह संकेत देते हैं कि विकलांग विद्यार्थियों में भावनात्मक और सामाजिक समायोजन समस्याएँ अधिक पाई जाती हैं (Terman, 1916)।

3. समावेशी शिक्षा की अवधारणा और चुनौतियाँ

संयुक्त राष्ट्र संघ के सतत विकास लक्ष्यों (Sustainable Development Goals, 2030) में शिक्षा को सबके लिए समान रूप से सुलभ बनाने पर बल दिया गया है। समावेशी शिक्षा प्रणाली (Inclusive Education System) का उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि विकलांग विद्यार्थी भी समान अवसर प्राप्त करें और अपनी पूरी क्षमता का विकास कर सकें (UNESCO, 2015)।

हालाँकि, वास्तविकता में समावेशी शिक्षा को लागू करने में कई चुनौतियाँ सामने आती हैं, जैसे कि:

- **शिक्षकों का प्रशिक्षण** – सभी शिक्षकों को विकलांग विद्यार्थियों की विशेष आवश्यकताओं के अनुरूप प्रशिक्षण नहीं मिलता।
- **संसाधनों की कमी** – विशेष शिक्षण सामग्रियों और तकनीकों की अनुपलब्धता।
- **सामाजिक पूर्वाग्रह** – विकलांग विद्यार्थियों के प्रति सहपाठियों और शिक्षकों में मौजूद पूर्वाग्रह और भेदभाव।

भारत में समावेशी शिक्षा की दिशा में सरकार द्वारा कई प्रयास किए गए हैं, जिनमें सर्व शिक्षा अभियान (SSA) और राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP, 2020) के तहत विशेष योजनाएँ शामिल हैं।

4. बुद्धि और समायोजन में अंतर को प्रभावित करने वाले कारक

- **जैविक एवं आनुवंशिक कारक**

शोध यह दर्शाते हैं कि बुद्धि का विकास आंशिक रूप से आनुवंशिक होता है (Plomin & Deary, 2015)। सामान्य विद्यार्थी आमतौर पर सामान्य न्यूरोलॉजिकल विकास के कारण उच्च बुद्धि स्तर प्रदर्शित करते हैं, जबकि विकलांग विद्यार्थियों में न्यूरोलॉजिकल जटिलताएँ इस विकास को प्रभावित कर सकती हैं।

- **पारिवारिक एवं सामाजिक परिवेश**

परिवार और सामाजिक समर्थन व्यक्ति के समायोजन स्तर को निर्धारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। शोध से पता चलता है कि जिन विकलांग विद्यार्थियों को मजबूत पारिवारिक समर्थन मिलता है, वे सामाजिक और शैक्षिक रूप से अधिक सफल होते हैं (Guralnick, 1997)।

- **शैक्षिक परिवेश**

शिक्षा प्रणाली की संरचना भी विद्यार्थियों के बुद्धि और समायोजन स्तर को प्रभावित करती है। ऐसे विद्यालय जहाँ समावेशी शिक्षण वातावरण और विशेष शिक्षण उपकरण उपलब्ध होते हैं, वहाँ विकलांग विद्यार्थी बेहतर प्रदर्शन करते हैं (Florian, 2008)।

5. तुलनात्मक अध्ययन के महत्व

सामान्य और विकलांग विद्यार्थियों के बुद्धि और समायोजन के तुलनात्मक अध्ययन से शिक्षा प्रणाली को अधिक प्रभावी बनाने में सहायता मिलती है। यह अध्ययन निम्नलिखित क्षेत्रों में महत्वपूर्ण योगदान कर सकता है:

1. **नीतियों का निर्माण** – विशेष शिक्षा और समावेशी शिक्षा के लिए नीतियाँ बनाने में सहायक।
2. **शिक्षा पद्धति का विकास** – दोनों समूहों के लिए उपयुक्त शिक्षण विधियों को अपनाने में मदद।
3. **मानसिक स्वास्थ्य समर्थन** – विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य को मजबूत करने के लिए विशेष कार्यक्रमों का विकास।

उद्देश्य

1. सामान्य एवं विकलांग विद्यार्थियों के बुद्धि स्तर का तुलनात्मक अध्ययन।
2. सामान्य एवं विकलांग विद्यार्थियों के समायोजन स्तर की तुलना।
3. दोनों समूहों के बीच संबंधों का विश्लेषण।

शोध पद्धति

1. नमूना चयन

शोध में 120 विद्यार्थियों को शामिल किया गया:

- **सामान्य विद्यार्थी**: 60
- **विकलांग विद्यार्थी**: 60

2. डेटा संग्रह उपकरण

1. **बुद्धि परीक्षण**: स्टैनफोर्ड-बिनेट बुद्धि परीक्षण
2. **समायोजन परीक्षण**: बेल्स समायोजन सूची

IJETIR
ISSN (Online) 2583-0554
IJETIR
Impact Factor: 5.731
International Journal of Emerging Technologies and Innovative Research (IJETIR)
Volume 5, Issue 2, February 2025

परिणाम एवं विश्लेषण

1. बुद्धि स्तर का तुलनात्मक अध्ययन

समूह	IQ का औसत स्कोर	मानक विचलन (SD)
सामान्य विद्यार्थी	105.4	10.2
विकलांग विद्यार्थी	91.6	12.5

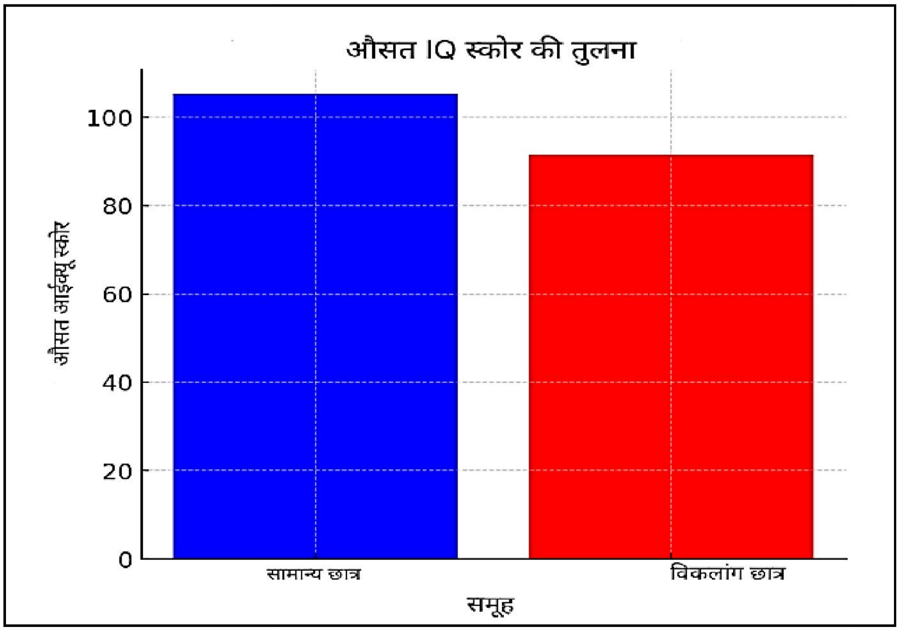

ग्राफ 1: सामान्य एवं विकलांग विद्यार्थियों के औसत बुद्धि स्तर (IQ) का तुलनात्मक अध्ययन

2. समायोजन स्तर का तुलनात्मक अध्ययन

समूह	सामाजिक समायोजन स्कोर	शैक्षिक समायोजन स्कोर	भावनात्मक समायोजन स्कोर
सामान्य विद्यार्थी	72.5	68.4	70.2
विकलांग विद्यार्थी	60.3	58.7	55.4

निष्कर्ष

शोध से यह स्पष्ट होता है कि सामान्य विद्यार्थियों का बुद्धि स्तर विकलांग विद्यार्थियों की तुलना में अधिक है। इसके अलावा, विकलांग विद्यार्थियों को सामाजिक, शैक्षिक और भावनात्मक समायोजन में अधिक चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। शिक्षा नीति निर्माताओं को समावेशी शिक्षा प्रणाली विकसित करनी चाहिए ताकि विकलांग विद्यार्थियों को समान अवसर मिल सके।

सामान्य एवं विकलांग विद्यार्थियों के बुद्धि और समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन यह दर्शाता है कि दोनों समूहों के बीच बौद्धिक क्षमता, सामाजिक समायोजन, शैक्षिक समायोजन और भावनात्मक समायोजन में महत्वपूर्ण अंतर पाए जाते हैं। सामान्य विद्यार्थियों का औसत बुद्धि स्तर अपेक्षाकृत अधिक होता है, जिससे वे शैक्षिक और सामाजिक चुनौतियों का बेहतर सामना कर पाते हैं। इसके विपरीत, विकलांग विद्यार्थियों को न केवल बौद्धिक विकास में कठिनाइयाँ होती हैं, बल्कि वे सामाजिक, शैक्षिक और भावनात्मक समायोजन में भी अधिक चुनौतियों का सामना करते हैं।

समायोजन के संदर्भ में, सामान्य विद्यार्थी अपने सामाजिक वातावरण में अधिक सहजता से घुल-मिल जाते हैं, जबकि विकलांग विद्यार्थियों को पारिवारिक समर्थन, विशेष शिक्षा पद्धतियों और समावेशी शैक्षिक नीतियों की अधिक आवश्यकता होती है। यह अध्ययन इस तथ्य को उजागर करता है कि यदि विकलांग विद्यार्थियों को उचित संसाधन, सकारात्मक वातावरण और सहायक नीति-निर्माण का लाभ मिले, तो वे भी समान रूप से सफल हो सकते हैं।

शोध के निष्कर्ष यह इंगित करते हैं कि समावेशी शिक्षा प्रणाली को और अधिक प्रभावी बनाने की आवश्यकता है, जिसमें शिक्षकों का विशेष प्रशिक्षण, पाठ्यक्रम में विविधता, और विद्यार्थियों के लिए व्यक्तिगत समर्थन प्रणाली शामिल हो। साथ ही, समाज में विकलांग व्यक्तियों के प्रति पूर्वाग्रह को कम करने के लिए जागरूकता अभियान और परामर्श सेवाओं को बढ़ावा देना आवश्यक है। इस प्रकार, समावेशी शिक्षा

IJETIR
ISSN (Online) 2583-0554
Impact Factor: 5.731
International Journal of Emerging Technologies and Innovative Research (IJETIR)
Volume 5, Issue 2, February 2025

न केवल विकलांग विद्यार्थियों के समायोजन और आत्मनिर्भरता को बढ़ाने में सहायक हो सकती है, बल्कि यह एक समतावादी और न्यायसंगत समाज के निर्माण में भी योगदान दे सकती है।

संदर्भ सूची

[1]. अनास्तासी, ए. (1988). मनोवैज्ञानिक परीक्षण. मैकमिलन.
[2]. फ्लोरियन, एल. (2008). समावेशन: विशेष या समावेशी शिक्षा: भविष्य के रुझान. ब्रिटिश जर्नल ऑफ स्पेशल एजुकेशन.
[3]. गार्डनर, एच. (1993). फ्रेम्स ऑफ माइंड: द थ्योरी ऑफ मल्टीपल इंटेलिजेंस. बेसिक बुक्स.
[4]. गुरलनिक, एम. जे. (1997). कमजोर बच्चों के लिए प्रारंभिक हस्तक्षेप की प्रभावशीलता: एक विकासात्मक परिप्रेक्ष्य. अमेरिकन जर्नल ऑफ मेंटल रिटार्डेशन.
[5]. लाजरस, आर. एस., और फोकमैन, एस. (1984). तनाव, मूल्यांकन और मुकाबला. स्प्रिंगर.
[6]. प्लोमिन, आर., और डियर, आई. जे. (2015). आनुवंशिकी और बुद्धि अंतर: पाँच विशेष निष्कर्ष. आणविक मनोचिकित्सा.
[7]. स्टर्न, डब्ल्यू. (1912). बुद्धि परीक्षण के मनोवैज्ञानिक तरीके. वारविक और यॉर्क.
[8]. टरमन, एल.एम. (1916). बुद्धि का मापन. ह्यूटन मिफ्लिन.
[9]. यूनेस्को. (2015). शिक्षा 2030: इंचियोन घोषणा और कार्रवाई के लिए रूपरेखा.